International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

महिला सशक्तिकरण की अवधारणाः आचार्य विनोबा भावे के साहित्य एवं चिंतन के संदर्भ में

चित्रा देवी
शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।
काव्या
शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।

सारांश
महिला सशक्तिकरण भारतीय समाज–चिंतन और सुधार आंदोलनों का एक महत्वपूर्ण विषय रहा है। आधुनिक भारत के प्रमुख चिंतकों में आचार्य विनोबा भावे का स्थान विशेष है, जिन्होंने महिला की गरिमा, समानता और समाज निर्माण में उनकी सक्रिय भागीदारी पर विशेष बल दिया। विनोबा का चिंतन गांधीवादी दर्शन से प्रेरित होते हुए भी अपनी विशिष्टता रखता है। उनके अनुसार महिला सशक्तिकरण का अर्थ केवल विधिक या राजनीतिक समानता तक सीमित नहीं है, बल्कि महिलाओं की बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक क्षमता की पहचान और सम्मान में निहित है।

विनोबा भावे के भूदान और सर्वोदय आंदोलनों में महिलाओं को केवल सहयोगी नहीं, बल्कि परिवर्तन की वाहक शक्ति के रूप में देखा गया। उनका मानना था कि महिलाएँ स्वभावतः अहिंसा, त्याग, करुणा और सेवा जैसे मूल्यों की धारणकर्ता होती हैं, और इन्हीं मूल्यों के आधार पर समाज में संतुलित प्रगति संभव है। पश्चिमी उदारवादी मॉडल की तुलना में विनोबा का दृष्टिकोण भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपराओं में निहित है, जो सशक्तिकरण को व्यक्तिगत गरिमा और सामूहिक उत्तरदायित्व से जोड़ता है।

यह शोधपत्र विनोबा भावे के साहित्य, भाषणों और सामाजिक–धार्मिक पहलों के आधार पर महिला सशक्तिकरण की उनकी अवधारणा का आलोचनात्मक विश्लेषण करता है। साथ ही यह भी अध्ययन करता है कि उनके विचार आज के लैंगिक विमर्श, नीतिगत निर्माण और जमीनी आंदोलनों के संदर्भ में कितने प्रासंगिक हैं। निष्कर्षतः यह शोध इस तथ्य को रेखांकित करता है कि विनोबा का दृष्टिकोण महिला सशक्तिकरण के लिए एक वैकल्पिक मॉडल प्रस्तुत करता है, जो भौतिक प्रगति के साथ–साथ नैतिक और आध्यात्मिक उन्नयन पर भी बल देता है।

मुख्य शब्द: महिला सशक्तिकरण, विनोबा भावे, सर्वोदय, भूदान, गांधीवादी चिंतन, सामाजिक परिवर्तन।

भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण का प्रश्न ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। युगों–युगों से स्त्रियों की स्थिति पुरुषों की तुलना में सीमित रही है, परन्तु स्वतंत्रता आंदोलन और सामाजिक सुधार आंदोलनों के साथ महिलाओं के अधिकार और उनकी भूमिका पर गहन चिंतन हुआ। महिला की स्थिति ऐतिहासिक रूप से जटिल और बहुआयामी रही है। प्राचीन ग्रंथों में नारी को 'शक्ति' और 'माता' के रूप में पूजित किया गया, वहीं मध्यकाल में उसे सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक स्तर पर पिछड़ेपन का सामना करना पड़ा। आधुनिक युग में राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, स्वामी विवेकानंद और महात्मा गांधी जैसे सुधारकों ने स्त्री–शिक्षा, स्त्री–अधिकार और स्त्री–स्वाभिमान के प्रश्न को उठाया। इसी पंक्ति में आचार्य विनोबा भावे एक ऐसे चिंतक और समाज–सुधारक थे जिन्होंने महिला सशक्तिकरण को सर्वोदय समाज की आधारशिला माना।विनोबा भावे का जीवन–संघर्ष केवल भूदान आंदोलन तक सीमित नहीं थाय उनकी दृष्टि में समाज का वास्तविक उत्थान तभी संभव था जब महिलाएँ पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर समाज–निर्माण में भाग लें। आज जब भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण को लेकर नीतिगत और आंदोलनात्मक स्तर पर अनेक प्रयास हो रहे हैं, तब विनोबा भावे का चिंतन प्रासंगिक और प्रेरणादायी प्रतीत होता है।आचार्य विनोबा भावे, जिन्हें 'आध्यात्मिक क्रांतिकारी' कहा जाता है, ने न केवल सर्वोदय समाज का सपना देखा, बल्कि महिलाओं को इस निर्माण प्रक्रिया का अनिवार्य घटक माना। उनका साहित्य और चिंतन महिलाओं की गरिमा, आत्मनिर्भरता और समाज में सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता पर केंद्रित है।

आचार्य विनोबा भावे का साहित्य एवं चिन्तन

आचार्य विनोबा भावे का साहित्य बहुत ही विस्तृत एवं गहन है। उन्होंने आजीवन अध्ययन का कार्य किया। उनका साहित्य 21 खण्डों में प्रकाशित हुआ है,जिसमें जिसमें हमे उनके चिंतन के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। विनोबा साहित्य को सामान्यतः दो भाग में विभाजित किया जा सकता है–11 खण्डों में विनोबा जी का संत साहित्य तथा धार्मिक धर्म साहित्य को समाहित किया गया है तथा अन्य खण्डों में विनोबा का सामाजिक एवं शैक्षणिक रचनात्मक प्रयोग से संबंधित चिंतन के साथ–साथ भूदान ग्रामदान गो रक्षा आदि का वर्णन किया गया है। विनोबा भावे के साहित्य के इन भागों में प्रथम भाग को शांति दर्शन तथा द्वितीय भाग क्रांति दर्शन प्रतीत होता है तथा दोनों का समन्वय शांति में क्रांति तथा अहिंसा क्रांति जैसा प्रतीत होता है।

"दूसरों को अपना बनाने के लिए प्रेम का विस्तार करना होगा, अहिंसा का विकास करना होगा और आज के सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन करना होगा। सर्वोदय जीवन के शाश्वत और व्यापक मूल्यों की स्थापना करना चाहता है और बाधक मूल्यों का निराकरण। यह कार्य न तो विधान द्वारा सम्भव है और न सत्ता द्वारा।"[1] आचार्य विनोबा भावे का साहित्य समाज सुधार और नैतिक चिंतन का जीवंत उदाहरण

है, जिसमें महिला सशक्तिकरण की अवधारणा भी प्रमुख रूप से प्रस्तुत की गई है। उनका लेखन केवल साहित्यिक दृष्टि से मूल्यवान नहीं, बल्कि उसमें नैतिकता, आध्यात्मिकता और सामाजिक न्याय के संदेश निहित हैं। विनोबा जी ने अपने ग्रंथों और भाषणों में बार–बार यह स्पष्ट किया कि समाज के वास्तविक उत्थान में स्त्रियों की भूमिका केंद्रीय है।

"स्त्रियों के काम के विषय में मुझे विशेष श्रद्धा, आशा और आस्था है। वे सार्वजनिक काम में भाग लें और केवल पुरुषों का अनुकरण करें, ऐसी मेरी अपेक्षा नहीं है। लेकिन मैंने अपेक्षा यह रखी है कि वे सार्वजनिक कार्य में शरीक होंगी, तो उससे सार्वजनिक सेवा–पद्धति की शुद्धि होती जायेगी और पुरुषों पर नियंत्रण रहेगा।"[2]

उनकी प्रमुख रचनाएँ जैसे सत्याग्रह का अर्थ, गीता प्रवचन और उनके पत्रों में नारी को केवल गृहिणी के रूप में नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र की आधारशिला के रूप में प्रस्तुत किया गया है।विनोबा भावे का मानना था कि स्त्रियों में त्याग,धैर्य, सहनशीलता और नैतिक शक्ति विद्यमान है, जो केवल पारिवारिक जीवन को ही नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय विकास को भी प्रभावित कर सकती है।उनके साहित्य में महिला शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है, जिसे उन्होंने चरित्र निर्माण और नैतिक जागरूकता का माध्यम बताया। भूदान आंदोलन और सामाजिक सुधार की प्रक्रिया में उन्होंने महिलाओं को सक्रिय भागीदारी और नेतृत्व के लिए प्रेरित किया। "आज तक स्त्रियों को सार्वजनिक जीवन में खींचने की जो भी कोशिश हुई है, वह पुरुषों के ढंग से काम करने की हुई है, स्त्रियों के ढंग से नहीं।"[3] उनका दृष्टिकोण यह था कि महिला सशक्तिकरण केवल आर्थिक स्वतंत्रता या कानूनी अधिकार तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसमें आत्मनिर्भरता, नैतिक बल और सेवा–भाव का विकास भी आवश्यक है।विनोबा जी के साहित्य का विशेष योगदान यह है कि उन्होंने महिलाओं को समाज में समान अवसरों और सम्मान के अधिकार के साथ–साथ नैतिक और आध्यात्मिक नेतृत्व की दिशा भी दिखाई। आधुनिक संदर्भ में उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं, क्योंकि ग्रामीण और शहरी समाज में लैंगिक असमानता, घरेलू हिंसा और सामाजिक रूढ़िवादिता जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं। उनका साहित्य हमें यह सिखाता है कि महिला सशक्तिकरण केवल अधिकारों की माँग नहीं, बल्कि नैतिक, शैक्षिक और सामाजिक दृष्टि से सशक्त होना है, जिससे महिलाएँ व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर सकारात्मक परिवर्तन ला सकें। इस प्रकार, आचार्य विनोबा भावे का साहित्य महिला सशक्तिकरण को एक बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करता है, जो आधुनिक समाज और राष्ट्र निर्माण के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होता है।

महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्तिकरण आज के सामाजिक और आर्थिक संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है, क्योंकि यह न केवल महिलाओं के व्यक्तिगत विकास से जुड़ा है, बल्कि समाज और राष्ट्र के व्यापक उत्थान का आधार भी है। महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य केवल कानूनी अधिकारों या आर्थिक स्वतंत्रता से नहीं है,

बल्कि इसमें महिलाओं को शिक्षा, आत्मनिर्भरता, नेतृत्व क्षमता और निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्रदान करना शामिल है। ऐतिहासिक दृष्टि से भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति समय–समय पर बदलती रही हैय वैदिक काल में उन्हें शिक्षा और सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी का अवसर था, जबकि मध्यकाल में पितृसत्तात्मक ढाँचों के कारण उनकी भूमिका सीमित हो गई। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान और आधुनिक भारत में समाज–सुधारकों जैसे राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, महात्मा गांधी और आचार्य विनोबा भावे ने महिलाओं के अधिकार और समानता के लिए सक्रिय रूप से प्रयास किए। आचार्य विनोबा भावे के स्त्री–चिंतन के अनुसार, महिलाओं में त्याग, धैर्य, सहनशीलता और नैतिक शक्ति विद्यमान होती है, जो केवल पारिवारिक जीवन में ही नहीं बल्कि समाज और राष्ट्र के निर्माण में भी निर्णायक भूमिका निभा सकती है। उनके विचारों में महिला शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का साधन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और नैतिक जागरूकता का माध्यम है, जो महिलाओं को आत्मनिर्भर और समाज परिवर्तन में सक्रिय बनाता है। आर्थिक दृष्टिकोण से, रोजगार और स्वावलंबन महिलाओं को न केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता प्रदान करते हैं, बल्कि उनके परिवार और समाज की प्रगति में भी योगदान देते हैं। सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में उनकी भागीदारी लोकतंत्र को अधिक मजबूत और समावेशी बनाती है। इसके बावजूद, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और रोजगार की कमी, लैंगिक भेदभाव, दहेज प्रथा, बाल विवाह और घरेलू हिंसा जैसी चुनौतियाँ महिला सशक्तिकरण की राह में बाधा हैं। इन समस्याओं का समाधान शिक्षा, कौशल विकास, कानूनी जागरूकता और सामाजिक मानसिकता में परिवर्तन के माध्यम से ही संभव है। महिला सशक्तिकरण का अंतिम उद्देश्य यह है कि महिलाएँ केवल अधिकारों की माँग करने वाली नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र की दिशा निर्धारण में सक्रिय और जिम्मेदार नेतृत्वकर्ता बनें। यदि महिलाएँ नैतिक, शैक्षिक और आर्थिक दृष्टि से सशक्त होंगी, तो यह न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन में सुधार लाएगा, बल्कि पूरे समाज में समानता, न्याय और विकास को स्थायी रूप से स्थापित करेगा। अतः महिला सशक्तिकरण केवल महिलाओं का मुद्दा नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण और सामाजिक उत्थान का एक आवश्यक स्तंभ है।

आचार्य विनोबा भावे के चिंतन में महिला सशक्तिकरण

आचार्य विनोबा भावे के चिंतन में समाज उत्थान के साथ साथ नारी सशक्तिकरण पर गहन विचार प्रस्तुत किए गए हैं। उन्होंने स्त्री शक्ति पर विशेष बल प्रदान किया। उनका मानना था कि स्त्रियों को सार्वजनिक कार्य के भाग लेना चाहिये एवं अपने कार्यों को करने के लिए पुरुषों का अनुकरण ही न करे अपितु अपने अनुसार कार्य करें। स्त्री जब सार्वजनिक कार्यों ने अपनी भागीदारी करेंगी तो इसमें निरंतर सुधार के साथ साथ इसकी शुद्धि भी होगी। भारतीय भारतीय संस्कृति में स्त्रियों से भी यह अपेक्षा की जाती है कि अहिंसा का संदेह दे जिससे कि दुनिया की रक्षा संभव हो सकेगी। "अहिंसा को स्वीकार करना उनके लिए पुरुषों की अपेक्षा ज्यादा सरल है, ऐसा माना जाता है। भावी युग में समाज का नियंत्रण करने का काम बहनों के पास आनेवाला है। उसकी तैयारी उन्हें अपनी सेवा–वृत्ति के द्वारा करनी है।"[4]

विनोबा भावे ने स्त्री को शांति की मूर्ति माना क्योंकि वे स्वभाव से सरल और विनम्र होती हैं। हालांकि स्त्रियों में भी पुरुषों की तरह विकार हो सकते हैं परंतु फिर भी स्त्री में मातृत्व होता है जिस कारण वे समाज में तारिणी शक्ति बन सकती हैं। तारिणी शक्ति ही शांति की मूर्ति बन सकती है।

स्त्री शक्ति से तात्पर्य

स्त्री के लिए प्रचलित शब्दों में से एक सबला और एक महिला आता है।अबला से तात्पर्य है दुर्बल अर्थात जिसके लिए दूसरों की रक्षा की आवश्यकता होती है,जो रक्षणीय हो। महिला का अर्थ है महान अर्थात शक्तिशाली। यह एक उन्नत शब्द है। ″मैं पूरे हिंदुस्तान में घूमा हूं, पर मैंने अबला समिति कही देखी नहीं, महिला समिति देखी है। बहनों ने परीक्षा की है और महिला शब्द चुन लिया है। मत्लब स्त्रियों ने तय किया कि हमारी महान शक्ति है, अल्प शक्ति नहीं। श्महिलाश शब्द ही बताता है कि स्त्री के बारे में भारत की क्या राय है और क्या अपेक्षा है। दूसरी बात, श्स्त्रीश शब्द श्स्तृश धातु से बना है। स्तृ का अर्थ है विस्तार करना, फैलाना। स्त्री गानी फैलानेवाली प्रेम को कुल दुनिया में फैलानेवाली। श्स्वीश राब्द में ही रवी का कार्य सूचित किया गया है। प्रेम का विस्तार, प्रेम की व्यापकता स्त्री के द्वारा होगी। स्वी समाज का तारण करनेवाली, तारिणी–शक्ति है।″[5] स्त्री के इतने शक्तिशाली होने के पश्चात् भी समाज की स्त्री को देखने की दृष्टि गलत है। स्त्री के पास अद्भुत शक्ति और सामर्थ्य है। वह सृजनकर्ता है, पालनकर्ता है और समाज की रीढ़ मानी जाती है। परंतु विडंबना यह है कि समाज ने उसे कभी उसकी वास्तविक शक्ति और स्वतंत्र पहचान के साथ नहीं देखा। इतिहास साक्षी है कि स्त्री को या तो भोग की वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया गया, या फिर वैराग्य के मार्ग में बाधा मानकर तिरस्कार के योग्य माना गया। विनोबा मीराबाई की कथा का वर्णन करते हैं। एक बार की बात है वे वृंदावन गई वहां पर उन्होंने एक महान संत से मिलने के लिए कहा क्योंकि वो मानती थी कि सन्यासी के दर्शन के बोध की प्राप्ति होगी। परन्तु उन्होंने स्त्रियों से मिलने से मना कर दिया। इस पर मीराबाई एक भजन में कहती हैं

″हूं तो जाणती हती के व्रजमां पुरुष छे एक
व्रजमां रहीने रह्म भलो तमारों विवेक।

इसमें एक विनोदभरा उपालंभ है कि व्रज में रहकर भी आपका पुरुषत्व का अहंकार गया नहीं। व्रज में पुरुष तो एक ही है और जो लोग व्रज में आते हैं वे स्त्रीत्व–पुरुषत्व का अहंकार छोड़कर उसकी उपासना करते हैं।″[6] विनोबा मानते हैं कि ये जो सारी ब्रह्मविद्या अर्थात आत्मज्ञान आया पुरुषों के द्वारा आगे आया। स्त्रियों की संख्या इसमें लगभग न के बराबर रही। हालांकि कुछ स्त्रियां भक्त बनी परन्तु भक्त होना ओर संसार में अपनी भागीदारी के द्वारा अपनी विचारनिष्ठा से सिंह के समान गर्जना और बात हैं। भक्ति में भी क्रांति की शक्ति होनी चाहिए। स्त्री को भी सुर्यनारायण की भांति होना चाहिए अर्थात डर से मुक्त। उन्हें अपने अंदर सामाजिक आक्रमण से लड़ने की शक्ति उत्पन्न करनी होगी। इसके लिए स्त्रियों को स्वयं आगे आना होगा और पुरुषों को भी इसकी जिम्मेदारी लेनी होगी। शक्ति का मूल स्रोत शारीर नहीं अपितु

अंतरात्मा है। आत्मा स्त्री पुरुष के भेद से रहित है। यह सर्वज्ञ एवं सर्वशक्तिमान है। इसलिए आवश्यक है कि भारत की स्त्रियाँ अपनी अंतर्निहित आत्मशक्ति को पहचानें और उसका जागरूक उपयोग करते हुए समाज के सामने आएँ। इतिहास साक्षी है कि जब–जब स्त्रियाँ अपने आत्मबल और चरित्र की शक्ति के साथ खड़ी हुईं, तब–तब समाज का मार्गदर्शन हुआ और राष्ट्र ने नवचेतना पाई। आने वाला समय भी इसी साक्षात्कार की पुकार कर रहा है। भविष्य में समाज की दिशा और अनुशासन का अंकुश स्त्रियों के हाथ में होगा, क्योंकि उनमें करुणा, संवेदना, धैर्य और नैतिक बल का संगम है।परंतु यह भूमिका निभाने के लिए मात्र संख्या या बाहरी शक्ति पर्याप्त नहीं है। इसके लिए स्त्रियों को भीतर से तैयार होना होगा। उन्हें ज्ञान से संपन्न होना होगा, ताकि विवेकपूर्वक निर्णय ले सकें। वैराग्य का भाव आवश्यक है, जिससे वे लोभ–मोह और स्वार्थ से ऊपर उठकर समग्र समाज के कल्याण को अपना ध्येय बना सकें। भक्तिभाव उनके जीवन को आस्था और आध्यात्मिक आधार देगा, जबकि निष्ठा उन्हें अपने कर्तव्य और धर्म के प्रति अडिग बनाए रखेगी।जब इस प्रकार ज्ञान, वैराग्य, भक्ति और निष्ठा से ओतप्रोत स्त्रियाँ समाज में आगे बढ़ेंगी, तब वे केवल अपने उद्धार का ही नहीं, बल्कि समस्त समाज और राष्ट्र के उत्थान का मार्ग प्रशस्त करेंगी। धर्म और संस्कृति पर उनका गहरा प्रभाव पड़ेगा, और यही प्रभाव उनके सच्चे उद्धार का कारण बनेगा। विनोबा भावे मानते थे कि स्त्रियों को शंकराचार्य के समान होना चाहिए। "जब तक शंकराचार्य के समान प्रखर वैराग्य–संपन्न और ज्ञानी स्त्री पैदा नहीं होती तब तक स्त्रियों का उद्धार श्रीकृष्ण, महावीर और गांधी जैसे पुरुष भी नहीं कर सकते। कुछ हद तक मदद की जा सकती है।"[7] स्त्री पुरुष में विरोध नहीं अपितु पुरुषों को पुरुषत्व और स्त्रियों को स्त्रीत्व के अभिमान से रहित होना चाहिए तभी इस समस्या का कुछ हल संभव होगा।

ब्रह्मविद्यारू स्त्री शक्ति का आधार

आचार्य विनोबा भावे ने स्त्रियों के लिए ब्रह्मविद्या मंदिर आश्रम पवनार की स्थापना की। 'इसकी स्थापना 25 मार्च 1959 को की गई थी ।'[8] विनोबा भावे स्त्री और पुरुष में भेद नहीं मानते थे अपितु उनका मानना था कि स्त्रियों के सामाजिक, राजनैतिक, कौटुंबिक कर्तव्य एवं अधिकार भी पुरुषों के समान ही हैं। दोनों में एक ही मानव आत्मा निवास करती है। इनमें जो बाहरी भेद दिखलाई पड़ता है,उसे बहुत ज्यादा महत्व देने की आवश्यकता नहीं है। इस बाहरी भेद के कारण जो थोड़ा बहुत कार्यक्षेत्र में अंतर है वह बहुत ही स्वाभाविक है। परन्तु इससे अलग जो समाज के स्तर पर भेद बना हुआ है वह कदापि सही नहीं है। यह जो दोनों में भेद का भ्रम बना हुआ है इसे दूर करने की आवश्यकता है। जो लोग स्त्रियों की शारीरिक बनावट के आधार पर उनमें भेद करते हैं वह सही नहीं है। यह मानना की स्त्रियों के लिए काव्य एवं पुरुषों के लिए गणित उत्कृष्ट है एक गलत अवधारणा है। स्त्री और पुरुष की ग्रहण शक्ति उनकी शारीरिक बनावट पर आधारित नहीं होती। स्त्री और पुरुष दोनों के जीवन का उद्देश्य परी पूर्णता होना चाहिए। तभी तभी दोनों के कल्याण के साथ–साथ समाज का भी कल्याण संभव हो सकेगा। स्त्री

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

और पुरुष दोनों में ही एक तत्व समान रूप से विद्वान में और वह है चेतन। "स्त्री–पुरुष में एक ही पुरुष–तत्त्व, जो चेतन है समानभाव से मौजूद है और दोनों के शरीर एक ही प्रकृति–तत्त्व के बने हैं। दोनों की संसारासक्ति और संसार–बंधन समान है और मोक्ष का अधिकार भी दोनों को समान है। दोनों के जीवन का उद्देश्य भी एक ही है परिपूर्णता प्राप्त करना।"[9] स्त्रियों के उद्धार हेतु स्त्रियों को स्वयं आगे आने की आवश्यकता है। विनोबा मानते हैं कि स्त्रियों के लिए चारों आश्रमों में से केवल गृहस्थ आश्रम में ही प्रवृत होने की अनुमति है। ऐसा नहीं कि स्त्रियों को सभी आश्रमों में प्रवृत्त होने की अनुमति से वे सभी सन्यासी ही बनेगी क्योंकि पुरुषों को इसकी मनुमति हैं परंतु वे सभी सन्यासी ही नहीं बन रहे हैं। परन्तु इसकी अनुमति ही न होना अर्थात अक्षमता होना प्रगति के मार्ग में बाधा बनता है। जहां तक देखा जाए तो सत्ता पर ज्यादातर पुरुषों का ही अधिकार है। स्त्रियों के लिए काम करने वालों में पुरुष ही अधिक रहे जिस कारण उनके लिए बहुत अधिक काम हो नहीं पाया क्योंकि इसमें एक सीमा आ जाती है।

"जहां तक मुझे मालूम है, स्त्रियों के उद्धार के लिए हिंदुस्तान में जो प्रयत्न हुए, उनमें प्राचीन काल में भगवान श्रीकृष्ण और भगवान महावीर के नाम आते हैं तथा अर्वाचीन काल में गांधीजी का नाम आता है। बीच का सारा काल शुष्क गया, ऐसा तो नहीं है, उसका भी एक इतिहास है। लेकिन ये तीन नाम भुलाये नहीं जा सकते।"[10] सदियों से ऐसा माना जाता रहा है कि स्त्रियों की रक्षा का भार पुरुषों पर ही है जब तक हम इस भावना को बनाए रखेंगे तब तक सही अर्थों में स्त्रियों की रक्षा होना संभव नहीं है। स्त्रियों को रक्षा की आवश्यकता है यह अवधारणा ही गलत प्रतीत होती है परंतु ऐसा माना गया है क्योंकि स्त्रियों के पास हिंसा हेतु पर्याप्त साधन नहीं है। जब बाद हिंसा की आती है तो यहां पर स्त्री पुरुषों की अपेक्षा कमतर पड़ जाती है परंतु इससे यह मानना की इसलिए वह पुरुषों द्वारा रक्षित होगी एक निराधार अवधारणा है। स्त्री पुरुषों द्वारा रक्षित नहीं अपितु स्वरक्षित है। हमें एक अहिंसा के समाज बनाने की आवश्यकता है जिसमें स्त्री पुरुषों द्वारा सुरक्षित नहीं अपितु स्वरक्षित होगी। स्त्रियों को आत्मा के बल पर ध्यान देने की आवश्यकता है। क्योंकि ऐसे में स्त्री प्रत्येक परिस्थिति में अपनी रक्षा करने में समर्थ होगी। शरीर बोल के स्थान पर स्त्रियों को आत्मा के बल पर निर्भर रहना होगा। हमने अपने जीवन को शरीर प्रधान बना लिया है जिससे कि स्त्री और पुरुष के बीच विरोध उत्पन्न हो गया है। शरीर के स्थान पर हमें आत्मा और चेतन को मानना चाहिए।

"स्त्री शक्ति के द्वारा समाज में परिवर्तन लाया जा सकता है। जब कभी मेरे सामने प्रश्न आया कि आखिर समाज–क्रांति कौन करेगा, तब मुझे यही लगा कि पुरुषों से दो कदम आगे बढ़कर स्त्रियां ही यह काम कर सकती हैं। इन दिनों लोग कहते हैं कि बहनों को आगे आना चाहिए। मैं भी यही कहता हूं। लेकिन दूसरे अर्थ में कहता हूं। बहनें फौज में, दफ्तरों में, सरकार में जायें, इससे मेरा समाधान नहीं होगा। मैं चाहता हूं कि राजनीति, सेना और धर्म (संप्रदाय) इन तीनों से मुक्त होकर केवल ब्रह्मविद्या का

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

आधार लेकर बहनों को आगे आना चाहिए।"[11] विनोबा भावे तो यहां तक मानते थे कि स्त्रियों को राजनीति से मुक्त रहना चाहिए। एवं समाज परिवर्तन के लिए सर्वोदय की शक्ति को अपनाना चाहिए क्योंकि यही एकमात्र ऐसी शक्ति प्रतीत होती है जिससे समाज की समस्याओं का निराकरण करते हुए मानव एवं समाज दोनों का उत्थान किया जा सकता है। परिवार को समाज एवं विश्व तक विस्तारित करना चाहिए। 'भारतीय संकल्पना वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा को मानकर चलने वाली है इस हेतु हमें सर्वोदय को अपनाते हुए संपूर्ण विश्व को अपना कुटुंब मानना चाहिए।,[12] विनोबा भावे मानते थे कि आज के मानव की जो सामाजिक रचना है वह मानव को सर्वनाश की ओर ले जाती है जिसका निर्माण पुरुषों के द्वारा किया गया है। इसमें हमें वह दिखाई देता है अभय नहीं दिखाई देता। स्त्रियों को स्वयं को हिंसा इत्यादि से मुक्त रखना पड़ेगा एवं इसके स्थान पर करुणा का साम्राज्य स्थापित करना चाहिए। स्त्रियों को शांति सेना की स्थापना करके समाज की सेवा करनी चाहिए। विश्व की शांति के लिए सर्वोदय समाज की स्थापना करने की आवश्यकता है। इसके लिए स्त्रियों को आगे आकर कार्य करना चाहिए। भारतीय समाज में अपने से पहले दूसरों के भले की कामना की जाती है। हम जो भी जल इत्यादि ग्रहण करते हैं सर्वप्रथम उसमें से अलग निकालकर रखते हैं और उसका त्यागपूर्वक उपभोग करते हैं।इस सबके साथ–साथ आचार्य विनोबा भावे संयम से परिवार नियोजन एवं भ्रूण हत्या पर भी अपने विचार रखते हुए स्त्रियों के कल्याण की बात करते हैं। वे स्त्री को मानव मूर्ति की शिल्पकार मानते हैं स क्योंकि माता ही बच्चे को सर्वप्रथम शिक्षा प्रदान करती है एवं उसे एक अच्छा नागरिक बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। स्त्रियों की शिक्षा की व्यवस्था करते समय उसमें अध्यात्म ज्ञान को प्रथम स्थान दिया जाना चाहिए।"हमारे यहां की स्त्रियां अध्यात्म–परायण थीं। महाभारत में है कि सुलभा ने जनक को ज्ञान दिया। इस तरह की और भी कहानियां हैं। वह हालत आज नहीं है। इसलिए पहली आवश्यकता अध्यात्मज्ञान की है। हम देह से अलग, अविनाशी, आत्मरूप हैं, परमेश्वर हमारे अंदर विराजमान है, उसके दर्शन इसी जन्म में हो सकते हैं, सारे जीव हमारे ही रूप हैं –इस आध्यात्मिक विचार में बहनें प्रवीण हों। तालीम का सारा आधार आत्मा का ज्ञान हो। स्त्री–शिक्षण में सत्य–निष्ठा और तपस्या की सख्त जरूरत है।जिसके अंदर अध्यात्मविद्या है, उसे सारी दुनिया भी नहीं दबा सकती। मेरा विश्वास है कि अध्यात्मविद्या से जबरदस्त क्रांति की जा सकती है।"[13]

आचार्य विनोबा भावे भारतीय समाज के उन महान चिंतकों में से हैं जिन्होंने स्त्री को केवल सामाजिक संरचना की परिधि में नहीं, बल्कि मानवता की नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति के रूप में परिभाषित किया। उनके साहित्य और विचारों में स्त्रियों की भूमिका केवल घर–परिवार तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज परिवर्तन और राष्ट्र निर्माण तक विस्तारित है। विनोबा भावे मानते थे कि जिस समाज में स्त्री सशक्त, शिक्षित और आत्मनिर्भर होगी, वही समाज नैतिकता, अहिंसा और सत्य की नींव पर खड़ा रह सकेगा।उनके चिंतन में महिला सशक्तिकरण का आधार केवल अधिकार–प्राप्ति तक सीमित नहीं था।

उन्होंने स्त्रियों के लिए शिक्षा, चरित्र, सेवा, त्याग और अध्यात्म को उतना ही आवश्यक माना जितना कि सामाजिक, राजनीतिक या आर्थिक अधिकारों को। विनोबा ने महिलाओं को ष्मातृशक्तिष और ष्नैतिक शक्तिष का रूप मानकर कहा कि स्त्री यदि अपने आत्मबल को पहचान ले तो वह समाज की दिशा बदल सकती है। इस दृष्टिकोण में वे नारी को केवल पुरुष की प्रतिस्पर्धी न मानकर, समाज के नैतिक उत्थान की धुरी मानते थे।महिला सशक्तिकरण की समकालीन चर्चाएँ प्रायः अधिकार, अवसर और समानता के इर्द–गिर्द घूमती हैं, जबकि विनोबा का दृष्टिकोण इससे आगे जाकर आत्मिक और मूल्यनिष्ठ पहलुओं पर आधारित है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि स्त्रियाँ यदि ज्ञान–वैराग्य और भक्ति से संपन्न होंगी, तो समाज में धर्म, करुणा और नैतिक अनुशासन स्थापित होगा। उनका मानना था कि भविष्य में समाज की बागडोर स्त्रियों के हाथ में होगी और वही समाज को सही दिशा देंगी।विनोबा भावे का यह स्त्री–चिंतन आज के समय में और भी प्रासंगिक हो जाता है, जब महिलाएँ तेजी से शिक्षा, राजनीति, विज्ञान और नेतृत्व के क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं, लेकिन साथ ही सामाजिक हिंसा, भेदभाव और मानसिक तनाव जैसी चुनौतियों का सामना कर रही हैं। विनोबा का संदेश है कि वास्तविक सशक्तिकरण केवल बाहरी अवसरों से नहीं, बल्कि भीतर की आत्मशक्ति, आत्मअनुशासन और नैतिक बोध से आता है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आचार्य विनोबा भावे का स्त्री–चिंतन महिला सशक्तिकरण की अवधारणा को एक गहरी दार्शनिक और नैतिक दिशा प्रदान करता है। उन्होंने स्त्री को केवल परिवार की रक्षक नहीं, बल्कि समाज की मार्गदर्शक और मानवता की आधारशिला माना। उनके विचार इस सत्य को रेखांकित करते हैं कि यदि स्त्रियाँ शिक्षा, आत्मनिर्भरता और धर्मनिष्ठा के मार्ग पर चलें तो समाज का नैतिक उत्थान सुनिश्चित है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उनका चिंतन हमें यह सिखाता है कि महिला सशक्तिकरण केवल अधिकारों की प्राप्ति नहीं, बल्कि मूल्य, सेवा और आध्यात्मिक जागृति का संगम है।

संदर्भ

1. धर्माधिकारी,दादा , सर्वोदय दर्शन , सर्वसेवा संघ प्रकाशन, राजघाट,वाराणसी, 221001।
2. देसाई रणजीत, प्रकाशक, विनोबा साहित्य खंड 17, शिक्षा,स्त्री शक्ति शिक्षण विचार ,कार्यकर्ता,पाथेय, गांधी जैसा देखा जैसा समझा, पृष्ठ संख्या 239 परमधाम प्रकाशन पवनार वर्धा, वर्ष 1998।
3. भावे, विनोबा ,नए भविष्य की ओर पृष्ठ संख्या 52, सर्व सेवा संघ प्रकाशन राजघाट वाराणसी,221001।
4. देसाई रणजीत, प्रकाशक, विनोबा साहित्य खंड 17, शिक्षा,स्त्री शक्ति शिक्षण विचार ,कार्यकर्ता,पाथेय, गांधी जैसा देखा जैसा समझा, पृष्ठ संख्या 239 परमधाम प्रकाशन पवनार वर्धा, वर्ष 1998।
5. तदेव, पृष्ठ संख्या 240।
6. देसाई रणजीत, प्रकाशक, विनोबा साहित्य खंड 17, शिक्षा,स्त्री शक्ति शिक्षण विचार ,कार्यकर्ता,पाथेय, गांधी जैसा देखा जैसा समझा, पृष्ठ संख्या 241 परमधाम प्रकाशन पवनार वर्धा, वर्ष 1998।

7. तदेव, पृष्ठ संख्या 242।

8. भावे विनोबा,अहिंसा की तलाश, पृष्ठ संख्या 223 सर्व सेवा संघ प्रकाशन राजघाट वाराणसी,221001।

9. देसाई रणजीत, प्रकाशक, विनोबा साहित्य खंड 17, शिक्षा,स्त्री शक्ति शिक्षण विचार ,कार्यकर्ता,पाथेय, गांधी जैसा देखा जैसा समझा, पृष्ठ संख्या 245 परमधाम प्रकाशन पवनार वर्धा, वर्ष 1998।

10. देसाई रणजीत, प्रकाशक, विनोबा साहित्य खंड 17, शिक्षा,स्त्री शक्ति शिक्षण विचार ,कार्यकर्ता,पाथेय, गांधी जैसा देखा जैसा समझा, पृष्ठ संख्या 253 परमधाम प्रकाशन पवनार वर्धा, वर्ष 1998।

11. तदेव, पृष्ठ संख्या, 265।

12. महा उपनिषद, चतुर्थ अध्याय, श्लोक, पृष्ठ संख्या 71।

13. देसाई रणजीत, प्रकाशक, विनोबा साहित्य खंड 17, शिक्षा,स्त्री शक्ति शिक्षण विचार ,कार्यकर्ता,पाथेय, गांधी जैसा देखा जैसा समझा, पृष्ठ संख्या 282 परमधाम प्रकाशन पवनार वर्धा, वर्ष 1998।

14. भावे विनोबा, नारी की महिमा,ग्राम सेवा मंडल, गोपुरी,वर्धा, वर्ष 1992

15. भट्ट मीरा,विनोबा के जीवन प्रसंग, सर्व सेवा संघ प्रकाशन राजघाट वाराणसी,वर्ष 2013।

16. भावे विनोबा,विजय बाल,संपादक,अनायास शब्दांकन, खादी सेवा ट्रस्ट ,गोपुरी वर्धा।

17. भावे विनोबा,जीवन दृष्टि,सर्व सेवा संघ प्रकाशन राजघाट वाराणसी,1982।

18. भावे विनोबा, आत्मज्ञान और विज्ञान,सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी।2016

19. भावे विनोबा,गीता प्रवचन, सर्व सेवा संघ प्रकाशन राजघाट वाराणसी,221001।

20. संपादक आचार्य नंदकिशोर,विनोबा संचयितता, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय,वर्धाभावे विनोबा,ग्रामस्वराज्य, संपादन ,पराग चोलकर,सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी 221001।

21. भावे विनोबा,स्वराज्य शास्त्र, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी,221001।

22. भावे विनोबा,लोकनीति, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट वाराणसी।

23. भावे विनोबा, साम्य सूत्र,सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी।2000

24. उषा,कृतयुगी विनोबा,परमधाम प्रकाशन, पवनार वर्धा,2013।

25. भावे विनोबा,सप्त शक्तियों,सर्व सेवा संघ प्रकाशन राजघाट वाराणसी।

26. भावे विनोबा,परिवार नियोजन ओर संयम,सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी।

27. भावे विनोबा,मधुकर,सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी ।

28. भावे विनोबा,नाम माला,सर्व सेवा संघ प्रकाशन राजघाट वाराणसी।

29. शर्मा रामगोपाल,आचार्य विनोबा भावे,प्रभात प्रकाशन।

30. बजाज गौतम,विनोबा दर्शन,लोकमत न्यूजपेपर प्राइवेट लिमिटेड।

31. चोलकर पराग,भूदान आंदोलन एक नजर , आचार्य कुल प्रकाशन।1997।
32. भावे विनोबा,भूदान यज्ञ,सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन।
33. भावे विनोबा,धर्मामृत,परमधाम प्रकाशन पवनार वर्धा।